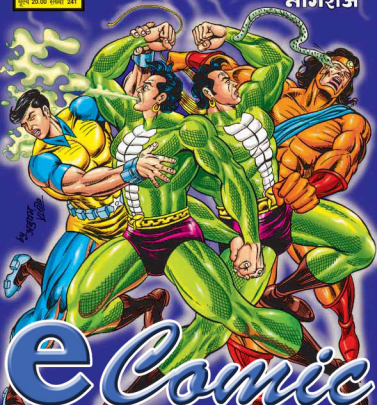


राज
कामिन्स
लिशियांक
मूल्य 20.00 रंश्या 241

आतंक

नागराज



जब सागराज से टकराए... खुद सागराज... तो क्यों तरफ लौट सक ही चीज कैसे
सकती है...

आतंक

संजय गुप्ता
की पेशकश



कथा:	चित्र:	ईंकिंग:	मुद्रण एवं रंग संशोधन:	सम्पादक:
जोशी सिन्हा.	अनुपम सिन्हा.	बिलोद कुमार.	मुनीष पाण्डेय.	समीप गुप्ता.



ये क्या हो रहा है ?
तुम सब चिल्ला क्यों
रहे हो ?

सौरी
दीदी !



लेकिन यह तो
पढ़ाई का बख्त है : खेलना
क्यों हो रहा है ?

उधर
देखो न, भारती
दीदी !

लेकिन मुझे किसलिए
बुलाया है, बच्चों ?
यहाँ पर किसको
स्वतंत्र है ?



हमने तो तुमको
अपने साथ खेलने के लिए
बुलाया है, लाराज !

खेलने के लिए ?
यह तो तुमने शान्त
कास किया, बच्चों !

लाराज !

आरंभ

यहाँ पानी की प्रॉब्लम को
सॉल्व करने के लिए राज
भड़का, बेरिंग करवा रहे हैं !
और पथरीली जमीन में छेद
करने के लिए जो डिजिटल मशीन
आई है, वह इतना डीर कर
रही है कि हम पद ही नहीं
सकते !



ओह !

यह सच है कि बच्चे मुझे
बहुत प्यारे हैं : मैं बच्चों के साथ
खेलना चाहता हूँ, और उनको
रवु का देखना चाहता हूँ !

लेकिन यह भी सच है
कि मैं एक 'क्राइम फाइटर'
हूँ : अपराध का बिनाहा
करके एक स्वच्छ समाज
की स्थापना करना मेरा
सपना है !



तुमसे मुझे
अपना समय बिताने
के लिए बुलाया !

हो सकता था कि इन
बकत में किसी अपराधी
से लड़ रहा होता...

या किसी दुश्मन को मौन के मुंह से बचा रहा होता : या फिर... कोई और जरूरी काम कर रहा होता :

हमसे शान्ति हो गई : हमको माफ कर दो, नाराज !

अब हम तुमको जबरन पढ़ने पर ही बुलाएंगे !

तो फिर मुंह लटकाए क्यों खड़े हो ? चलो खेलते हैं !

या sssss



प्रॉमिस ?

प्रॉमिस, नाराज !

और फिर-

नाराज तो हम सबकी इंग्लिश को बर्बाद कर रहा है !



कम से कम 'सर्प बोय' को तो 'बोय' में जाने दो, नाराज !



इस वक़्त बचपों के साथ, बच्चा बने हुए जंगराज की देखभाल कोई सोच भी नहीं सकता कि ये बीजहरीला फोलाव है, जिसे सिर्फ देखकर ही अपना छिछों और आंतकजड़ियों के डोरा उड़ जाते हैं!

सिर्फ जंगराज को ही देखना रहैल, फंदा, या पत्ती भी निकालेगा!

ये 'दृढ़ बन' खिलास मशीन जरा भी आवाज करने नहीं देती! फटाफट झूम कर देती है, और फिर रांदा पत्ती बाहर निकालने लगती है!



ये नहीं सोचता कि ये दिनों का काम एक दिन में हो जाता है! हर वक़्त शांति ही...

... अरे! पत्ती-अना बंद हो गया!



कुछ शंखी फंस गई होगी! 'मकड़ज-मशीन' का प्रेशर बढ़ाओ!

बढ़ा रहा हूँ, उम्मत! लेकिन फंसने वाली चीज बहुत मोटी है!

ठंडक लगेगा!



ये... ये क्या फंसा हुआ है, पाहुच में?



राज योगिपरा

ये... कौन सी दुनिया है ?

नागराज ! ये कोरिंगा का पाहुण फाड़कर निकल है !

नागराज !

पाती के साथ-साथ एक अंडर-गार्डेड सुन्नीबल भी कसर आ गई है, बचो !

यहीं रहना ! मैं अभी आया !

इसको छोड़ दो भई ! दुनिया के दर्शन तुमको मैं कराया हूँ !

तुझे... तुझे एक मामूली इंसान होकर होकर... पर कब करले की हिम्मत की ?

हंकारा तुमके इसकी सजा देगा! ... ज़रूर देगा!

ओह! किताब बंद कर रहा है! कर ले! ऐसे बार नो सागराज रोज ही भोगता है!

उरे! उरे! मेरा लक, सर्र बगौर मेरे आदिवा के मेरे खरीप मे निकल कन यह बार भोग रहा है!

मेरे आदिवा पर सागराज! और तुम्हारी 'करी' का जवाब तुम्हारे सामने है!

अभी ये हालत तुम्हारी होने वाली थी! यह आवुड़ी बार था!

अभी मैं अति आत्मविश्वास के चक्कर में 'सारा' जता!

ओह! छलछल लौड़ांगी!

सारा तो नू जानता ही सागराज! ... नू अपनी मौत को निर्फ छोड़ी देर के लिए टाल सकता है! हमेशा के लिए नहीं!

बड़ा है





महाराज को मर्द छोड़ पाने का
सोचा ही नहीं मिला-

आसस ह! ये...
ये क्या ? इसका
सीधा घोंसले ही अजीब
में एक अजीब सी
ऊर्जा बौझ रही
है !

आतंक

ले फिर इस
ऊर्जा का मतलब
क्या है... ?
आसस ह!

धूमक

लेकिन ये ऊर्जा
मुझे कोई सुझाव नहीं
पहुँचा रही है !

महाराज की नजरें उठीं-

और उसका दिल बहल गया-

आसस ह! यह क्या ?
मैं डर रहा हूँ, पर धकील
नहीं कर पा रहा हूँ !

वेदाचार्य अभिषेकपाल की
इमारत जिनदा हो उठी है !
और मुझ पर हमला कर
रही है !

यह तो
जादू है !

वेदाचार्य

लेकिन तू सफल नहीं हो रहा, ईकारा! सागराज तेरे आदू को लेबू देगा! तेरे आदू से बनी हर चीज को लेबू कर!

तुम्हीं कर चपरा, सागराज!

क्योंकि अब तो मेरी जीभ फिर से उम आई है!



अरे! अरे!
ये 'भवज जीव' मुझे छोड़कर बच्चों की तरह लपक रहा है! उसको अपने अन्दर नहीं च रहा है!

तू ते 'भवज जीव' के बच्चों को अपने तक पहुँचाने ही नहीं दे रहा है! एक बार 'भवज जीव' तुम्हको निगल आस तो तू मेरा आदू लेबू कर कभी बाहर नहीं आ पाया...

... लेकिन 'भवज जीव' तुम्हें निगलने कैसे? हाँ, एक रास्ता है!

हाँ, सागराज! अब तू खुद अपना 'भवज जीव' के मुँह के अन्दर!

क्योंकि मैं देख चुका हूँ कि बच्चों से तुम्हको कितना प्यार है!

जबर जकेरा ! ये तो सिर्फ भबन-
जीव का मुंह है ! मनुष्य बचचो को
बचचो के लिए तो मैं मौत के मुंह
में भी कूद सकता हूँ !



हा हा हा ! घुन राया सीध मालम,
भबनजीव के अन्दर ! अब यह
बाहर कभी नहीं निकल
पाएगा !



अब मुझे यह पंख मे जाले
मे कोई नहीं रोक सकता ! यह
भूमिदान जल को निकाल देगा,
और रक्ष क्षिरोमणि बिभयपू
आजद हो जाएंगे !



हा हा हा हा ! भाव्य
हमारे साथ है ! मानवो
के साथ नहीं !



चल मेरे
साथ !

महाराज, भबनजीव के अन्दर मौत से मुक्त रहा
था-



घबराओ मत बचचो !
मे आ रहा हूँ ... ओह !
स्विय मुझे जकड़ रहे हैं !



महाराज ! हमको बचाओ, क... कमरा छोटा होना आ रहा है ! दीवारें हमको पीसने के लिए हमारे पास आती आ रही हैं !



आतंक

यहां पर भी धड़ी हो रहा है, बच्चों ! पर घबराओ मत ! मैं तुमको एक खरोंच तक भी नहीं लगाने दूंगा !

धड़क

क्या करूं ? ये दीवार तो हिल तक नहीं रही है ! जादू की जादू ही काट सकता है !

हम जादुई दीवार को तोड़ेंगे, जादुई सलारों !



महाराज !

घबराओ मत बच्चों ! मैं आ गया हूं !



मैं अभी तुम लोगों को यहां से बाहर ले... आऊँ ह !



असीम हिल रही है, महाराज !

भवतजीब हिल रहा है ! डरो मत, बच्चों !

राज कागिस

मुझ पर कसे स्फियों के झिकड़े
रबुल गर है! छाती... भवतजीव मुझे
जहां पर लाल चाहता था, वहां पर ले
आया है! पर कहां?

बिल्डिंग हिलती जा रही है! और
अब पानी के टूटे पाईपों से पानी
भी निकलकर वहां भर रहा
है! ...

... हायव भवतजीव
हमको बुझोकर मरना चाहता
है!

लेकिन—

जाराज! मेरे बचपन में
जालत हो रही है!

मेरे भी!

समझा! हम भवतजीव के पैर
में हैं! ये भोजन पचाते काले
रस्ताघन हैं, पानी नहीं! और
हमको हिलवा बुल्लिसिज आ रहा
है, तकि हमको ये रस्ताघन जख्मी
छील लके! ओह! चाहे रबुद
मर जाऊं, लेकिन बच्चों को
तो बचाता ही होता!... पर
कैसे?

राजलक्ष्मी भी इस मुसीबत का एक हिस्सा बनने वाला था-



भुव, सर! वो दोलें
रुंटे जेलरी डॉप में
करेडों का स्पल लुट-
कर और लक शॉर्ट को
घायल करके फरार
हो रहे थें!

सुझे सूचना हो मिलत
पड़ने मिल गई थी! इस
ट्रैफिक में इनका भाग पाला अलमभव
है! ये जल्दी ही पकड़े जाएंगे!



भुव पीछे लड़ा गया
है, पीछड़े!

लडाते दे! हमारा प्लान
फूलफूल है! हमको कोई
जहाँ पकड़ सकता!



वो चुप पर आ
गए हैं, सर!

गुड! पीछे
भुव है, और अगे
हम!...

... अब तो
समझो कि ये
पकड़े गए!



लेकिन-

सुडा 111



हा हा हा! अब समझो!
हमारा प्लान! अब हम
जहाँ चाहेंगे, वहाँ पर
बाहर निकलेंगे!

पीछी में
हमको कौन
पकड़ेगा?

कहवा 111 कुतू

भुव!

राज कोमिका





धीछड़े की आल बचाले के अलगा और कुछ नहीं सूझ रहा था-

य... यह क्या है? यहाँ का पानी कुछ अजीब लग रहा है!



लेकिन ये धीछड़े तो और गहराई में उतरना जा रहा है!



और मैं जानता हूँ कि अब मुझे क्या करना है!

मुझे संसार में उत्पन्न मचाना है! अतंक कैलाश है दुनिया में!



असह्य है! यह क्या हो गया? इसका रूप बदलकर इतना भयंकर कैसे हो गया? और... और ये अतंक कैलाश क्यों चाहता है?

कुछ भी हो! मुझे इसको पाली के अंदर ही रोकना होगा। मैं इसको राजनगर में लकड़ी फैलाते नहीं दूंगा!



इसने इन्सिडायली प्रती को मैं रोकूँ तो कैसे? ये तो मुझे रसींचता से ज रह है!

लेकिन कैसे?



इसको रोकने के लिए कोई भारी चीज चाहिए! त्वरित औसती चीज! हां, मिला गई ऐसी चीज!



ये बूबी हुई कार!

धींधे का कप बढ़ना संभावक रुक राधा-

आइस ह! धींधे का दम घुट रहा है! हवा चाहिए! मीन चाहिए धींधे को!



ये छोरी तो काफी मजबूत है! और लिपटी भी कमकर है!



इस बौद्ध को हटाना होगा!

हटाना होगा!



दूरी अपनी कमजोरी खुद ही बना दी है, धींधड़ा! अब तू नहीं बचेगा!

करीम: 'सुपर कुल सिन्डिकेट' का ईतजाम करो! और उसको लेकर जल्दी से जल्दी गांधी पुल पर पहुंचो!



इस पुल पर तो क्या, अब कोई घर से बाहर ही नहीं निकल पाएगा!

असह!

धींधड़ा शासन काहर, और बचने की राहार लगाएगा यह काहर! तब धींधड़ा उसको बताएगा बचने की जगह!



मैं भूलना नहीं हूँ! सलह का पानी भी खोला नहीं है! पानी में और लेते जाते पहुँचा! लेकिन राजनगर को इस उबला देते वाली भाप से कैसे बचाऊँ? अब तो इस राक्षस को ठंडा कर सकते वाली कोई भी चीज समझाई जा सकती है, और न ही लाई जा सकती है!

असह! अगर के शीते पानी को खोलाकर जादुई भाप में बदल रहे हैं, जो पूरे राजनगर में फैल रही है!



महाराज को भी कोई तरीका नहीं सूझ रहा था-



तुम तोरा इस सर्प-खोल से बाहर मत निकलना बरछों! ये सर्प-खोल खुद शलकर भी तुमको इस रसायनों से बचानेवा।

और इसको शलमे पर मैं दूसरा खोल तैयार कर दूँगा!

बच्छों की तरफ से अब मैं कुछ देर के भिम लिफ्टिल हूँ! अब इस भल-जीव का कोई हल निकालना पड़ेगा! ये भल-जीव इस वक्त जीवित प्राणी की तरह व्यवहार कर रहा है! और इस जीवित प्राणी को मेरा बिच शल देना है!

देखू कि मेरे 'सर्प बिच' का इस 'जीवित दुमपल' पर क्या असर होता है? *

और पूरे भल की दीवरे लेने कबूकड़ा उठीं-

माले भल-जीव चीरका हो-



नसिचें हवा महाराज का बिच, पूरे भल से फैला-



हो! मेरे बिच का कुछ असर तो हुआ है! रसायनों की फुहार निकलनी बन्द हो गई है! ...

... और दीवरे भी टूटने लगी हैं!

हम पर डूँटें गिर रही हैं! ओक ये क्या कर दिवा भैले? भल-जीव का शरीर खली चढ़ दुमपल भी सल रही है! अब इसी में हकली कल बल जलनी!



ओक! अगर यह भल जीवित न होला, तो बाघद पूं शलना भी नही! अब क्या करे?

ओह ! इस ईमारत को फिर से पहले जैसा 'मूल' किया जा सकता है ! इसमें जीबल उस सींग के कारण दौड़ रहा है, जिसे होंकारा ने जमीन में धोखा था ! उसकी बाहर निकालने से ये ईमारत फिर से आत्म ईमारतों की तरह जड़ हो जाएगी ! ... लेकिन उसकी लिकाइने के शिया में यहां से बाहर कैसे निकलूं ?



"वे उस सींग को जमीन से बाहर खींच निकालेंगे -"



"और वेदाचार्य भविष्यदास की विधि का फिर से साक्षात्कार हो जाएगी -"



"थोड़ी दूर-फूट के बावजूद भी ईमारत वहीं-साक्ष्य है -"

बस, बचचों ! एवरा टल गया है ! अब हल मुरझित है !

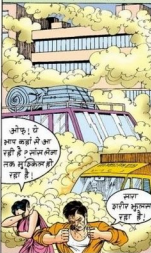


क्या भूकंप आया था, लाबाराज ?





राजलक्षार तपियों पर बड़ी सुभीकाल दूध चढ़ी थी-



राज कविपस



आतंक

भी धड़का, राजलक्षार पर कहर बरसा रहा था-



ही हा हा हा! अब तक ये सब ब्रह्मिन्स- ब्रह्मिन्स करने लगे होंगे! अब मैं जगत् में आकर उनको बलकेश बहू म्हाल, जहां पर आकर उनकी आज बच सकती है!

पहले अपनी आज बचाने की सोच, भी धड़के!



भूच! तु अभी तक उबला नहीं? कमाल है!

ले, मैं तुमको अभी उबाल देता हूं। तेरी शास्त्र, तेरे डायर में जैसे ही आग लगी हो आग लगी, जैसे उबले आलू पर मैं तुम्हारा धिलका!



शर्मा तुम्हारे दिमाग पर खट गई है!...

...तुम्हारी ठंडा करना पड़ेगा! इस निमिषंडर में भरी हाई प्रेशर मिक्सिड ऑक्सीजन द्वारा जो कि अत्यधिक ठंडी होती है!



आसस ह! आसस ह! दिमाग सुन्न हो रहा है! अब बलभी भी बन्द हो रही है! ... लेकिन मैं हार नहीं मंजूना! यारों तरफ फोपी शर्मा इस ठंड को अपनी ही दूर कर देगी!

राज कौनिस



धुव के कार इन्जिन इन्जली तो थे-



अब तू नहीं बचेगा तुम्हें फाड़ डालूंगा मैं!



मेरे लीचे भी भंवर बन रहा है! यह प्राकृतिक नहीं लगता! किसका काम हो सकता है ये? किसका- राहब...



और मलह भी धीरे-धीरे डगल हो गई-



आलोक

महाराज 'डिमिंग मशीन' के निशानों का पीछा करने-करने महानगर से दूर आ गया था-

यह तो मैं 'मैकाल फास्ट' में आ गया हूँ! महानगर और राजनगर के बीच में फैला हुआ अंगार! लेकिन हंकारा 'डिमिंग मशीन' को यहाँ क्यों लाया है?



ये यहाँ की जमीन से पानी क्यों निकाल रहा है? कुछ खनकर है! इसको रोकना होगा! तुरन्त!



महाराज! तुम अबतक जीवित बचकर कैसे आ गया?

पहला हंकारा! 'डिमिंग मशीन' के साथ!



अभी बताता हूँ! पहले पार्किंग में सर्व सैला को फेंकाकर पानी का बाहर निकालना तो रोक लूँ! मशीन दूधने के बावजूद भी पानी को निकालती आ रही है! इसमें तेरा जल्द कुछ लेना भला होगा है, जो नहीं होगा चाहे!

पाणी का निकालना एक शाय
है! सिर्फ तेरी आज का निकालना
बाकी है!

आसस ह! नु विष
कुंकार से मेरी आज
जल्द ले सकता है,
मगराज! लेकिन तुझे
इसका सौका नहीं
मिलेगा! क्योंकि नुने
अपनी कब्र अपने
अप ही खोद सी है!

अपने सर्पों का इस जल
से स्पर्श करा के! इस जल से
जल को अपने अन्दर पोषा
हुआ है! और अब वही
जल तेरे सर्पों के अन्दर
धुल शाय है!

और तेरे सर्पों के अन्दर
राक्षसी शक्तियाँ धुल चुकी
हैं! अब जल ने अपनी
मौत से!

ये सब एक
भूमिगत जल को
बाहर निकालना
है!

ओह! जादुई जल से तो एक
सुन्दर प्राणी तो पैदा कर दिया!
मेरे ही सर्प अब अपनी फुंकार
सुन कर छोड़ रहे हैं!

जादुई फुंकार
से सुन पर बहोड़ी
धारही है!



इस फुंकार को अपनी जहरीली
फुंकार से काटन होश!

-मिलन
होते ही-



आसस ह! बिस्फोट!
मेरी फुंकार के साथ मिलते ही ये
दोनों फुंकारें फट पड़ीं!

उधर मैंने एक पल
पहले फुंकार छोड़ना रोक न दिया
होगा तो मेरा सर भी उड़ जाता!

महाराज की फुंकार का जादुई फुंकार से-

आसस ह! बिस्फोट!

राज कौमिल

इसकी फुंकार रोकने का एकमात्र
रास्ता येही फुंकार है! और उसका
प्रयोग करने में येही अपनी जान जा
सकती है! इसकी फुंकार को रोकना
होना! लेकिन इसको रोक तो कैसे?

सक रास्ता
है...



लवराज की आंखों चमक उठी-

सम्बोधन हवा में
तेरले लवरा-

और फुंकार छोड़ने वाले दोनों सचों को एक-दूसरे की मूरत में लवराज लजर आले लवरा-



दोनों एक-दूसरे पर ही फुंकार उठावले लवरे-

और उन्ही पल, उसमें लवराज की
फुंकार भी शामिल हो गई-

दोनों सचों को अपनी फुंकार में
आलम होले का सौका ही नहीं मिल-



और उस धलके ने उनके पिछड़े उड़ा दिन-



आश्चर्य की बात है! मेरी या मेरे लर्ने की फुंकार में तो कोई विस्फोटक क्षमता नहीं है! फिर इसकी फुंकार विस्फोटक क्यों थी? डायद ये जवू का असर था!



नहीं, गंगाराज! ये उस वक़्त मेरे डायर का असर था! और मैं 'ध्वंसक सर्प' का जादुई रूप हूँ! ...

... इसीलिए उनकी फुंकार में भी मेरे गुण समा गए थे! तू उनसे बच गया, लेकिन मुझसे नहीं बच सकता!



ओफ़! ये मुझको उलभारन हूँ, और हंकारा भूमिगत जल में आने वाली को निकालना आ रहा है!

उधर ध्रुव का डायर भंवर के अन्दर खिंचता ही जा रहा था-



ओह! ये भंवर तो पानी के अन्दर ही काफी दूर तक बनी हुई है!

पानी खरा हो गया है! और डॉक जैसी सधलियाँ भी तजर आ रही हैं! मतलब साफ़ है! भंवर मुझे खींचती हुई लसुद्र तक ले आई है!

ओह! ये कल्ला तो मेरा देरवा हुआ है! मैं समझ गया कि ये भंवर किसले बनाई है!



मैं जाने कौन सी सुजीवन आने वाली हूँ!

यह स्वर्ण जहारी कर्मियों का काम है!
उन्होंने ही इस मेकर के द्वारा भीखु
को रबीच है, और मुझे भी बुला भेजा है!
लेकिन... उसको मुझसे क्या काम हो
सकता है?



ओह! यानी तुमको
सही स्थान का पता नहीं
है?

और फिर-

तुमको बुलाने का
कारण यही है, भुव!
इसने राजसभा पर आप के
बादल देरने थे! उसमें एक
रक्तजाला बुई ऊर्जा थी! उस
जाबुई ऊर्जा का कारण जानने
के प्रयास में इसने तुमको और
इस राक्षस को देरका! हम यह
जानना चाहते हैं कि यह
तुमको कहाँ मिला?



सही स्थान? मुझे सारी
बातें साफ-साफ बताओ!

यह देवजाति और रक्त
जाति की युगों पुरानी
युद्ध शाखा का एक हिस्सा
है, भुव!...

... बात लगभग
सोढ़े तीन हजार
साल पुरानी है!...

यह तो एक महत्वपूर्ण
है! जो पानी में सोता लगाने-
लगाने राक्षस बल गण! कैसे बल
यह मुझे नहीं मालूम!



...जहाँ पर आज राजनगर और महानगर बसे हुए हैं, वहीं कहीं पर एक विशाल, इम्निठाली और समृद्ध राज्य शिरोधरपुर हुआ करता था-

उस समय दोनों का प्रभाव लगभग पूरी पृथ्वी पर फैल चुका था। पाप के रक्षक, रक्षजालि वाली वाली राक्षसों का लगभग विलुप्त हो चुका था। उनकी अपनी संस्था और प्रभाव बढ़ाने की संकल्प जबरन थी। और राक्षसों के लयक विभक्त ने इस काम के लिए शिरोधरपुर को ही चुना-



उसने शिरोधरपुर के पास में ही, गुप्त रूप से एक भूमिगत नगर का निर्माण किया। यह सैन्य साजशी नगर था, जिसमें प्रवेश करने वाला हर देव या इंसान, राक्षस बन जाता था-



समस्या एक ही थी-

शिरोधरपुर की जलता को उस भूमिगत नगर में आने के लिए सजबूर कैसे किया जाए-

इसका रास्ता भी विभक्त ने निकाल ही लिया-

उसने राक्षसी इच्छियों के द्वारा शिरोधरपुर में कहर फैला दिया-



और डिहान्तु का राजा आदमी हंकारा बीच बदलकर
मुनीबत में फंसे कई लोगों को सुरक्षित स्थान पर ले
जाने का त्यागच देकर उनको भूमिगत नगरी में ले आया-



उस पाताल नगरी में पैर रखते ही वे सभी राक्षसी
झलियाँ से युक्त हो गए-



और यह मिलमिल चालता रहा : डिरोधरपुर के बप्पी
ही राक्षस बनाकर, डिरोधरपुर में तबाही मचाते रहे-



और उससे बचाने का भांसा देकर हंकारा, डिरोधरपुर बसियों को पाताल नगरी में त्याकर राक्षस बनाता रहा-

हमको अब तक इस बात
का पता चला, तब तक पूरा
डिरोधरपुर राक्षसजाति में
बदल चुका था : अब सगरी ही
रास्ता था : पाताल नगरी पर
हमला करके उसको राक्षसों
सहित गण्ट कर देना!



लेकिन यह
काम अपनात नहीं
था : क्योंकि नगरी
भूमिगत थी : बाहर
से उस पर हमला
कर पाला असंभव
था!



और अन्दर जाने से हम देव भी राक्षस बन सकते थे!

हमको कोई दूसरा तरीका सोचना था!

और वह तरीका सीधा सा था!

अगर हम पाताल नगरी में नहीं आ सकते थे...

...तो हमको उस राक्षसों को बाहर निकालना था!



हम अपने हथियारों द्वारा भूकंप लाए। पाताल नगरी को आग से जलाने की कोशिश की। नगरी को धुंसे में भरना चाहता!

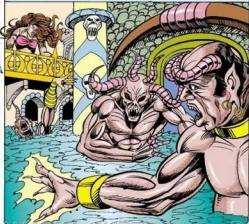
लेकिन सभी प्रयास व्यर्थ रहे, राक्षस बाहर नहीं निकले!

हमने उस तीर को धरती के गर्भ में धोड़ दिया। तीर की ऊर्जा, भूमिगत जल के साथ मिश्रित हुई, और तीर द्वारा बनी सुरंग से वह जल ऊपर आकर भूमिगत नगरी को भरने लगा। वह जल जादू की भी धोल रहा था, इसलिए राक्षसों की सारी जादुई इच्छियां उस पर विफल होती रहीं! और पूरी पाताल नगरी 'जल मिश्रण' में अरगई!

हमने जल द्वारा पाताल नगरी को भरने की कोशिश की! लेकिन यह प्रयास भी विफल रहा-



तब एक देव ने एक ऐसे 'ऊर्जा तीर' का आविष्कार किया, जिसकी ऊर्जा पानी में घुलकर ऐसे मिश्रण का निर्माण करती थी, जो जादुई ऊर्जा की भी धोल सकता था-



राज चौधरी

पाताल नगरी से बाहर आने की कोशिश करते राक्षसों को देवों ने ढेर कर दिया, और जो अन्दर रहें, वे जल में डूब सरे-

विभक्त्यु की पाताल नगरी का अत्यंत सम्राज हो गया था-



लेकिन लम्बे तीर हजार साल के बाद आज वह आतंक फिर से जारी उठा है! इस राक्षस के ज़मीर में वही तीर ऊर्जा मौजूद है, जिसने जल सिक्का के जरिए राक्षसी ऊर्जा को मोहर लिया था!

ओह! यह नदी में डूबना हीचे वाला राज था कि भूमिगत जल के संपर्क में आ गया होगा! यह वही जल होगा, जो पाताल नगरी में भरा हुआ था!

उसको उठने से पहले ही लपट कर ली होगी! चलो मुझे नदी में वह स्थान दिखाओ, भुव!

उसके बाद हम अपनी योजना बनायेंगे!



हमको फिर लकड़ी डर है! विभक्त्यु का! अगर वह भी किसी प्रकार ज़िन्दा हो उठाने इस बार वह स्वतंत्र होगा! इतना आसान नहीं होगा!



लालराज भी अंजलि में, विभक्त्यु को उठने से रोकने की कोशिशें कर रहा था -

हंकारा, पाती को बाहर निकालना ही जा रहा है! और मैं अपने ही ध्वंसक सर्प से जुड़ने के बखतर में उस तक पहुंच ही नहीं पा रहा हूँ!



इस क्षीर के दो लोगों को मैं सम्मोहित करने में सफल रहा था। इसको भी अपने सम्मोहित जाल में ही फँसाता हूँ!



ओऽऽऽ हूँ!
ओऽऽऽ हूँ!

ये सम्मोहित
सरों! मैं इस जाल
में नहीं फँसूँगा,
सागराज!

कोई फायदा नहीं है,
धर्मक! कभी न कभी तो
तू और सबोधेही! सब तू
सम्मोहित हो जाएगा!



मैं अपनी औरों ही
फोड़ लूँगा सागराज! फिर तू
मुझे कैसे सम्मोहित करेगा?

तुझे मैं अभी भी अपनी
जीभ से सहस्रभूत कर सकता
हूँ, सागराज! तू बच
नहीं सकता!



ओऽऽऽ हूँ! बिघ फुंकार तो मेरे
अपने ही सर्प पर रखन असर
नहीं करेगी! ...

लेकिन कायदू ध्वंसक सर्प अपने ही साथी को मर्द कर सकें !



हा हा हा !

मुझे तो इनके डर और से बिस्कोट करने के लिए और तब तक मिल रहे हैं !



बार
ओफ़ !
उल्टा पड़
गया !

सम्झौदा बार नहीं कर सकता,
ध्वंसक सर्प छोड़ नहीं सकता,
फुंकार अमर करेगी नहीं, तो
फिर कौन सा बार करे ?

जराफती सर्प इसको काट सकते हैं,
लेकिन उनकी भी ये अपने पास
तक पहुंचने ही नहीं दे रहा है !



जमीन के बीच से निकल
रहा भूमिगत जल तेजी से
चरों तरफ फैल रहा है ! ध्वंसक
मुझे इसी जादुई जल में
गिराने की कोशिश कर
रहा है !...



... ताकि मैं भी
इनके जैसा ही
बन जाऊँ !... अगर
जल्दी ही ध्वंसक
मेरे काबू में नहीं
आपता ...

... तो झाड़व ये अपने इसदे में कामयाब हो जायगा...

ध्वंसक पर काबू पाले के लिए पहले मुझे इसकी 'विस्फोटक-शक्ति' का राज जानना पड़ेगा! और यह राज मुझे वे विशेष लाशफनी सर्प बतल सकाते हैं, जिनके शरीर से ध्वंसक सर्प पैदा होते हैं!

लाशराज को जल्दी ही जवाब मिलेगा -

छाती अंगर इसके शरीर का संपर्क हुआ से काट दिया जाए, तो इसकी विस्फोटक-शक्ति भी खत्म हो जायगी!



ओह! ध्वंसक सर्प, सुरुषाल; ग्लिमरीन के बने होते हैं! और बाघ के संपर्क में आते ही ये हवा से लड्डूटोजन को सौंकर शक्तिशाली विस्फोटक लड्डूटो-ग्लिमरीन का निर्माण करते हैं!

यह काम झाड़व मेरी विष फुंकार कर सके!

फुंकार ने धारीं तरफ से ध्वंसक को घेर लिया -

लेकिन -



ओह! यह तो मेरी घालक फुंकार को डार्बल की तरह पीरहा है!

अब क्या करें?

हां! एक तरीका है! इसकी जादुई-जल के कारण बने कीचड़ में गिराया होगा!



...और
ये 'विस्फोटक इमला'
करने की स्थिति में नहीं
रह पायगा!

अब
तु मुझसे नहीं
बचेगा, डोंगरा !

पहले तु अपने-
आप से बचने,
लावाज !

ओह! मैं आदुई जल में
नहा रहा हूँ! अब मैं भी
राक्षस बन जाऊँगा!



सुभे इस जादुई जल के असर से बचना होगा ! लेकिन कैसे ? समझा ! इस जल का असर अभी मेरी तबचा तक ही है ! इसने पहले कि ये जल मेरे शरीर के अंदर से शरीर में घुसे...



लेकिन ऐसा करने से मैं कालजोर भी हो जाऊंगा ! सुभे बहुत खतरा होगा कि मैं जादुई जल में गिर न जाऊं !



अब नू राणा नाराज !



अब नू मेरे जादुई शरीर से नहीं बच पाएगा !

मे... मेरी खाल निकल रही है ! मेरी हड्डियाँ को दब रही है !

ओह !

नगराज पर आवृ अस्पर करता आ रहा था-



दिल्लिह सङ्गीत तेजी से घाटी निकालती आ रही थी-



और पातालनगरी में भरे जल का स्तर घटता आ रहा था-



आँसू हैं!

मैं... मैं कितने दुर्गों बाद उठा हूँ? घना नहीं! वेनों ने मेरी योजना को ध्वस्त कर दिया! लेकिन इस बार बिम्बु उनके जाल में नहीं फँसेगा!



पता करत हूँ, कोई देव मेरी नगरी के अप-पास ले नहीं लें!

है! स... एक देव 'पाताल नगरी की सीमा' पर है!



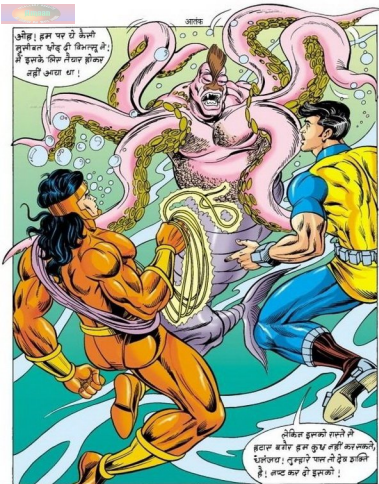
"उस सीमा पर, जिसका पता अब तक देवों को भी नहीं था..."

"लेकिन अब वह सीमा द्वार, एक नदी के तल में चला गया है! कमाल है! यही मुझे सोच कई सदियों बीत चुकी हैं..."

"लेकिन इसने कोई फर्क नहीं पड़ता! मैंने जो योजना सदियों पहले बनाई थी, वह अब पूरी होगी! तब देव मरेंगे!...और शुरुआत इस देव से होगी..."



ओह! हम पर ये कैसी
मूलीबल छोड़ दी बिभत्सु ने!
मैं इसके सिर तैयार होकर
नहीं आया था!



लेकिन इसको रास्ते में
हटार बगैर हम कुछ नहीं कर सकते,
धर्मजय! तुम्हारे पाल तो देख डालते
हैं! लपट कर दो इसको!

राज कौमिवस

मेरा 'स्वर्ण पादा' जिसको
जकड़ लेता है, वह 'स्वर्ण-पादा'
का गुलाम बन जाता है!

छापाड़ इसको भी
'स्वर्ण-पादा' गुलाम बना
सके!



हा हा हा! फूंक ले
बादल को उड़ाला
छहता है! चटपाड़ को
इस सा मुसीबत से
गुलाम बनाना तू?

ओह! मुझसे
स्वर्ण-पादा छूट
गया!

ओह! हमारे शरीर के छये
तरफ का पानी जम रहा है!
हम बर्फ में टुकले जा रहे
हैं! निर्फ हमारे निर बर्फ ले
बचे हैं!



देख! चटपाड़
अभी भी अपनी
सर्जों का इलाक
है!

और मेरी
सर्जों तुम दोनों
की मौत है!

निर्फ निर
ही क्यों?

आरंभ





पहली शक्का देव की !
 क्योंकि वह मेरा कुछ देर तक
 प्रतिरोध कर सकता है ! फिर
 सातव को तो सचधर की तरह
 मरना पड़ेगा !

असह्य है !
 इसकी भुजा
 पर बसे धल्ले
 मेरे कवच को
 तोड़ रहे हैं !

असह्य है ! मेरी भारी उल्लिखें बेकार
 सबित हो रही हैं !

अब मेरी भारी है
 मनुष्य ! मेरे लिए
 तो एक ही धल्ला
 काफी होगा !

यह सच कह रहा है ! मुझे
 इसकी कमजोरी दुंदुभी होगी !
 लेकिन ऐसा जीव तो देना ही
 पहली बार गया है ! धीरे
 के अलावा !

धीरे धीरे ! धन ! अब
 मुझे इसकी एक कमजोरी
 समझ में आ रही है !
 उसीद है कि मेरे मुंह से
 निकली राजन सीटी,
 पानी जैसे सधन
 सधन में तेजी से
 चलकर समुद्र तक
 जा रही पड़ोसी ! ...



... और सब जल्दी
ही आसानी!

सब आने में देर नहीं लगी-

अपनी जादुई शक्तियों की सार
कोशिशों के बावजूद भी पतपत अपने
आपकी टोंकिलों के घातक हमले से
बचा नहीं पाया -



यह कैसा घमण्डार है, भूष ?
घटपाद, डोलिफिनों से अपनी सुरक्षा
क्यों नहीं कर पा रहा है ? इसके
पास तो जादुई कल्पितों हैं !

पाताल नगरी की
जादुई कल्पितों को
धमंजय !

अब मैं इनसे बचने
का उपाय सोच रहा था तो मेरे दृष्टिगत
में यह स्वप्न आया कि 'धींधड़ा' तो
जादुई जाल का स्पर्श होने ही तक
बल राधा था !

लेकिन यह पानी तो
यहां पर लवियों में था !
जल में रहने वाले कई
जीव-जन्तु इनके स्पर्श
में आते रहें हीं !

लेकिन हमको इस नदी में
किसी दैन्य सधली के देखे जाने की
सबर कभी नहीं मिली ! छोटी पाताल
नगरी का जादू जल-जन्तुओं पर
असर नहीं करता था ! हाथड़ इन्सिम
क्योंकि पाताल नगरी को स्वयं तैर
में सातकों को राक्षस बसाने के लिए
बसाया गया था !

कालिका है, भूष !
अब हम समुद्री
जीव-जन्तुओं की
सदृश से राक्षसों की
इस नगरी को नष्ट
कर देंगे !

यह स्वप्न दिशा
में आते ही मैंने अपनी मित्र
डोलिफिनों की मदद के लिए
बुला भेजा ! और लतीजा
तुम्हारे सामने है !

विभक्त्यु इसकी काट भी
दुंद भेसा, धमंजय ! उसकी रोकने का सबसे
अच्छा उपाय, मैत्रिल जल को बाहर निकालने
में रोकना है !

हमको दुरन्त-जंगल
के उस स्थान पर पहुंचना
चहिये, जहां पर जल को
निकाला जा रहा है !

मंजित जल को धर्ती पर निकाला जा रहा था-

असह्य है!

हा हा हा ! कुछ ही देर में तेरी
दूटी-फूटी इच्छितियों से भरा तेरी
रक्त का पैला पानी पर तैरना
सजरा अलगा, लोभराज !

पानी पर तैरती मेरी लाडा ! ओह !
यह तो बड़ा जल है, जिसमें जल
को घोलने की शक्ति है ! ऐसा
हँकारा मैं सबुद कहा था !



धारी यह जल मेरे करीर पर बस जावू
को भी घोल सकता है ! कोशिका
करके देखने में कोई हर्ज नहीं है !...

... बर्तौ मौत तो मेरे भी निश्चित
है ! और इस जादुई जल में भंग
कर भी !

और- वाह ! जादू सचमुच रक्त
हो रहा है ! अब इससे पहले
कि हँकारा का जादू रक्त हो जल, और जल
का जादू दुबारा मुझे पर चढ़ जाय, इस पानी
से अलग हो जाना चाहिये !

लोभराज ! तू ... तू ठीक
हो गया !





हां! और इसका मतलब है कि अब तू बीमार पड़ने वाला है!

मेरी विष फुंकार को पीकर!

इसलिए मैं तब तक अपनी सांस रोके रहूंगा, जब तक मेरा जली सिकालने का कार्य पूरा नहीं हो जाता!

तेरी फुंकार के घातक प्रभाव को मैं जान चुका हूँ!

अब मैं मेरे बालों से नहीं, बल्कि तू मेरे बालों से बचने की कोशिश करता फिरना लवाराज!



ओह! इसको मैं तक छूने से बेहोश कर सकता हूँ! लेकिन इसके पास तक पहुंचूँ कैसे? हर जीवित वस्तु इसका जादुई बार रसाकार स्वतंत्रताक प्राणी बन जाएगा! इसलिए जहाँ मैं अपने सर्पों का बार कर सकता हूँ, और वही पेड़-पत्तों तक का कवच बनाकर इस तक पहुंच सकता हूँ! फिर क्या कहें?

ओह, हाँ! तक तरीका है! तक कवच है, जिस पर जादुई बार बेअसर सबित होंगे!

ओह! इसको मैं तक छूने से बेहोश कर सकता हूँ! लेकिन इसके पास तक पहुंचूँ कैसे? हर जीवित वस्तु इसका जादुई बार रसाकार स्वतंत्रताक प्राणी बन जाएगा! इसलिए जहाँ मैं अपने सर्पों का बार कर सकता हूँ, और वही पेड़-पत्तों तक का कवच बनाकर इस तक पहुंच सकता हूँ! फिर क्या कहें?



तू... तू कैचुली पहनकर मेरी तरफ बढ़ रहा है! इस पर मेरे जादुई बार बेअसर साबित हो रहे हैं!



जादुई जाल का बार करना है!

जादुई जाल भी इस पर असर नहीं कर रहा है! पर क्यों? क्यों?



क्योंकि मेरे झीरी से अलग होने के बाद ये कैचुली जाल ही नहीं है, बल्कि... और मूल चीजों को तुम्हारा जाल कोई स्वतंत्रता रूप नहीं दे सकता!

ओह! सर घुम गया! अपने-आपको संभालना मुश्किल हो रहा है!



अब लालाजी मुझ पर काबू पा लेंगे! एक ही रास्ता है इसको रोकने का। बला-बाद में छद्मता से जाल हीन इसको। फिर ये लालाजी बतने से बच नहीं पाएंगे!

राज कोविन्द



तभी-

धनंजय: यह तो... नगराज है! और
सक राक्षस उसको जमीन के नीचे
घसीटता चाहता है! डायद फालतू
नगरी में!

हम ठीक समय पर पहुंचे हैं
भुव! यह हंकारा है! विशम्भू का
स्वयं स्वेक! हमको नगराज को
बचाता होगा!

सक रक्षक ही सी ठाकू हो गई- एक तरफ स्वर्ण पहा की जकड़ थी- तो दूसरी तरफ जट की पकड़।



और इस वक़्त से-

असह्य! मेरे... मेरे
शरीर के वो हिस्से हो
रहे हैं! मैं... मैं वो भागे
में बंद रहा हूँ!



अरे! नागराज, एक के बजाय
दो नागराजों में बंट गया है! एक
नागराज तो तुम्हारे पक में बंधा रह
गया है, लेकिन दूसरा पाताल गहरी
में लिंच रहा है, धरंजय! अब
क्या होगा ?

पाताल गहरी में
गया नागराज, सक्ष्मी क्षमियों
में धुक्ल हो जलगा : तबाही
कैलाशग, बिलाडा कैलाशग,
और बज जलगा महाबला
का ...

दुश्मन नागराज

शीघ्र आ रहा है दो नागराजों
और एक धुक् से युक्त यह
विनाशकारी विशेषांक



अरे! नागराज, एक के बजाय
दो नागराजों में बंट गया है! एक
नागराज तो तुम्हारे पक में बंधा रह
गया है, लेकिन दूसरा पाताल गहरी
में लिंच रहा है, धरंजय! अब
क्या होगा ?

पाताल गहरी में
गया नागराज, राक्षसी शक्तियों
से युक्त हो जाएगा ! तबाही
कैलाश, बिलास कैलाश,
और बज जाएगा महाबला
का ...

दुश्मन नागराज शीघ्र आ रहा है दो नागराजों
और एक ध्रुव से युक्त यह
विनाशकारी विशेषांक